Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 9 | Oct - 2015

गायत्री मन्त्र आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

नीरज शर्मा
अध्यक्षा, संस्कृत विभाग , कन्या महाविध्यालय, जालंधर .

प्रस्तावना -

ओ३म भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्व धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात॥ यजुर्वेद, ३६-३.

परमात्मा हम आपके उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप श्रेष्ठ, तेजस्वई पापनाशक, दिव्यगुण युक्त स्वरूप को धारण करते हैं, जो हमारी बुद्दि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

ओ३म – परमात्मन ।भूः – सत स्वरूप ।भुवः – चित्तस्वरूप । स्वः – आनन्दस्वरूप ।तत – उस ।सवितुः – संसार के उत्पादक ।वरेण्यं – श्रेष्ठ ।भर्गः – तेज को ।देवस्य – दिव्य गुणयुक्त ।धीमहि – धारण करते हैं ।धियो – बुद्धि को ।यो – जो ।नः– हमारी। प्रचोदयात – सत्ककर्मों में प्रेरित करे ।

गायत्री मन्त्र के अर्थ को भलिभांति समझने के लिए उसके एक-एक शब्द का गहन-गम्भीर अध्ययन करना अपेक्षित है । उनके गर्भ में छिपे अर्थ रहस्य और सन्देश को विचारने की आवश्यकता है । जिस प्रकार ब्रह्म के स्वरूप का बखान करने में वेद शास्त्र भी असमर्थ हैं गायत्री के सर्वांग अर्थ एवं महत्व को स्पष्ट कर पाना भी। क्योंकि ब्रह्म के ही समान ब्रह्म शक्ति अवर्णनीय है। हां इतना अवश्य है कि इसके स्वरूप को कुछ अंशों तक समझने के लिए गायत्री गीता, गायत्री स्मृति, गायत्री उपनिषद, गायत्री रामायण, गायत्री हृदयम, गायत्री पंजरम, गायत्री संहिता और गायत्री तन्त्र कुछ अंशों तक सहायक हो सकते हैं ।

गायत्री मन्त्र के तीन भाग हैं – (क) महाव्याहृति – ओ३म भूर्भुवः स्वः । इसमें परमात्मा के स्वरूप का वर्णन है कि वह सत, चित और आनन्दरूप है । उसके आनन्द की प्राप्ति ही मनुष्य-जीवन का लक्ष्य है । (ख) तत....धीमहि । उस आनन्द की प्राप्ति के लिए परमात्मा के तेज को या ज्योति को हृदय में धारण करना होगा । परमात्मारूपी दिव्य रत्न को हृदय में रखे बिना ज्ञान की शक्ति ही उदबुध्द नहीं होगी। बुद्धि की शुद्धि के लिए आस्तिका, ईश्वर-विश्वास और ईश्वर की सर्वव्यापकता का ज्ञान चाहिए । मन्त्र का द्वितीय भाग आस्किता और आत्मिक शक्ति को उत्पन्न करता है । (ग) मन्त्र का तीसरा भाग- धियो यो न प्रचोदयात, गायत्री मन्त्र के जप का फल बताता है । ईश्वररूपी मणि को हृदय में धारण करने से उसका प्रकाश बुद्दि को शुध्द करता है । बुद्दि स्वयं सन्मार्ग पर चलने लगती है ।

परमात्मा की अनन्त शक्तियाँ हैं, जिनके कार्य और गुण अलग-अलग हैं । उन शक्तियों में गायत्री का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है । बौध्दिक क्षेत्र के अनेकों कुविचारों, असत संकल्पों, पतनोन्मुख दुर्गुणों का अन्धकार गायत्री रूपी दिव्य प्रकाश के उदय होते ही हटने लगता है । उन सभी दुर्बलताओं, उलभनों, कठिनाइयों का हल निकल आता है, जो मनुष्य को दीन-हीन, दुखी-दरिद्री चिन्तातुर एवं कुमार्गगामी बनाती हैं।

ब्रह्मा ने चार वेदों की रचना से पूर्व चौबीस अक्षरों वाले गायत्री मन्त्र की रचना की। इस मन्त्र को एक-एक अक्षरों में सूक्ष्म तत्व समाहित हैं, जिनके पल्लवित होने पर चार वेदों की शाखा-प्रशाखाएँ उद्‌भूत हो गई।

एक वटबीन के गर्भ में महान वृक्ष धिमा होता है। जब वह अँकुर रूप में उठाता है, वृक्ष के रूप में बड़ा होता है तो उसमें असंख्य शाखाएँ, टहनियाँ, फूल, फल लद जाते हैं। इन सबका इतना बड़ा विस्तार होता है- जो उस मूल वट-बीज की अपेक्षा करोड़ो-अरबों गुना होता है। गायत्री के चौबीस अक्षर भी ऐसे ही बीज हैं, जो प्रस्फुटित होकर वेदों में महाविस्तार के रूप में अबस्थित होते हैं।

गायत्री की महिमा का बखान वेद, शास्त्र, पुराण आदि सभी ग्रन्थ करते है। अथर्ववेद में इसे आयु, प्राण, शक्ति, पशु कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली बताया गया है। जिस प्रकार पुण्यों का सारभूत मधु, दूध का घृत, रसों का पय है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र वेदों का सार है।३) इस मन्त्र को समान मन्त्र चारों वेदों में नहीं है। सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तय, गायत्री मन्त्र की एक कला के समान भी नहीं है। यह मनुष्य की प्रत्येक कामना को पूर्ण करती है-

मोक्षाय च मुमुक्षणा श्री कामना श्रिये तथा ।
विजयाय युयुत्सुना व्याधितानाम रोगकृत ॥

वि. धर्मोत्तर पुराण में इस प्रकार आता है-

कामकामो लभेत्कांम गतिकामस्तु सद्गतिम ।
अकामस्तु तदाप्नोति यद्विष्णोः परमपदम ॥

वेदमूर्ति पं.श्री राम शर्मा आचार्य जी ने अनेकों ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है जि गायत्री मन्त्र की महिमा का साक्षात प्रमाण हैं।

सार रूप में मात्र इतना कहना उचित जान पड़ता है कि 'वेदमाता गायत्री का मन्त्र छोटा सा है। उसमें २४ अक्षर हैं, पर इतने थोड़े में ही अनन्त ज्ञान का समूद्र भरा पड़ा है। जो ज्ञान गायत्री के गर्भ में है, वह इतना सर्वांगपूर्ण एवं परिमार्जित है कि मनुष्य यदि उसे भली प्रकार समझ ले और जीवन में व्यवहार करे, तो उससे लोक-परलोक सब प्रकार के सुख शान्तिमय बन सकते हैं'। यह एक तथ्य है, जिसे अनेकों बार प्रमाणित किया जा चुका है। गायत्री की महत्ता, शक्ति एवं स्वरूप कल भी पारस था, आज भी पारस है और आने वाले कलम में भी पारस ही रहेगा। गायत्री मन्त्र को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में इसे एक बार पुनः देखने का प्रयास करेंगे।

आधुनिक युग का आधुनिक मनुष्य आशाशति उन्नति कर रहा है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी सुगमता से कर रहा है। विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है। 'भौतिक रूप से मनुष्य जितना सम्पन्न हुआ है, आध्यात्मिक रूप से उतना ही विपन्न हो गया है। वैभव विलास के एक से एक सामान, नई-नई सुख सुविधाएँ मनुष्य को भौतिक सुख पहुँचाने में सक्षम हैं। लेकिन इतना होने पर भी वह उदास है। उसके मन की शान्ति छिन गई है। उसके अधरों की सहज स्मिति, उसके नेत्रों की चमक, उसके मुख मण्डल का (वैदिक भाषा में कहें तो) ब्रह्मवर्चस या तेज सब न जाने कहाँ खो गया है'? वह प्रत्येक क्षण मानसिक पीड़ा को झेल रहा है। व्यक्ति का मन चिन्ता में निरन्तर जल रहा है क्योंकि चिन्ता मनुष्य को प्रत्येक पल जलाती है- कहा भी गया है-

चिन्ता चिता से बढ़कर है, वह घुन के समान लग जाती है ।
मुर्दे को चिता जलाती है, जिन्दे को चिन्ता खाती है ॥

वास्तव में चिन्ता मन की आँधी है, जीवन का ज्वर है, प्राणों का परिताप है। इससे मन की क्षमता का ह्त्रास होता है ; सामाजिक व्हवहार बिगड़ता है, शरीर छीजता है। मानव व्यक्तित्व के सभी प्रदेशों में चिन्ता के छा जाने से बुध्दि कुण्ठाग्रस्त हो जाती है। चित्त चँचल और मन मूढ़ हो उठता है या बुझकर राख हो जाता है। जीवन में बाहर और भीतर की 'व्यवस्था' का विघटन प्रारम्भ हो जाता है। व्यवस्था के इस विघटन को रोककर चित्त की

चँचलता को दृढ़ता में परिवर्तित कर, मन की मूढ़ता को नष्ट कर उसे जागृत करने का साधन हमारे वेदों में वर्तमान है । 'संसार का कोई ऐसा धर्मग्रन्थ नहीं है, जिनके पढ़ने से तुरन्त आशा की अक्षय-ज्योति जगे, विश्वबन्धुत्व का भाव जागृत हो, आत्मिक बल और मनोबल की वृध्दि हो, उत्साह और पुरूषार्थ का संचार हो, आस्किता की अक्षय भावना उद्बुध्द हो, पापों से घृणा उत्पन्न हो, सत्य और अहिंसा के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न हो, दान दया और परोपकार की भावना जागृत हो, नव-जीवन और स्फूर्ति जागृत हो, दीन-हीनों के उद्धार का भाव उत्पन्न हो, सात्विकता और संयम की वृध्दि हो । इन गुणों की प्राप्ति के लिए संसार में एकमात्र प्रकाश-स्तंभ वेद हैं।' वेद शब्द उस चेतना शक्ति का ज्ञान है, जो सूक्ष्मतम आन्तरिक संवेदों से लेकर बहिर्मुखी चित्तवृतियों तथा क्रियाओं तक में व्यक्त हो रही है।

आधुनिक मनोविज्ञान आत्मविश्लेषण को स्वस्थ मन के लिए अच्छा उपचार मानता है। ध्यान, प्रार्थना, आत्मनिवेदन, आत्मचिन्तन आदि के द्वारा सभी मनुष्य अपने मन को टटोलते है और मानसिक सन्तुलन बनाए रखने में सफल होते हैं। साथ ही यह भी याद रखना होगा कि असामान्य मन आत्मविश्लेषण करने में समक्ष या समर्थ नहीं होता। इसीलिए वेद मन्त्रों में विभिन्न देवों से प्रार्थनाएँ भय, चिन्ता और पाप से मुक्ति के लिए है। 'मन्त्रों के सस्वर पाठ से जो सूक्ष्म ध्वनितरंगे उत्पन्न होती हैं, वे शरीर और मन को

पुष्ट करती है । इससे शरीर में विद्यमान दुषित तत्व नष्ट हो जाते हैं। इसका फल यह होता है कि मनुष्य मानसिक तनाव, शिरोरोग, स्नायुरोग आदि रोगों से मुक्त होता है। मन्त्रशक्ति से दुर्विचारों का नाश होता है। अतः मन शुध्द और पवित्र रहता है। मन की पवित्रता से मानसरोग स्वयं शान्त हो जाते हैं। मन्त्रचिकित्सा में संगीत और शब्दशक्ति का समन्वय रहता है। अतः इसकी गुणवत्ता बढ़ जाती है। गायत्री मन्त्र इस दृष्टि से अमित शक्ति युक्त कहा गया है। 'गायत्री मन्त्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है। इस महामन्त्र की उपासना आरम्भ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नयी हलचल एवं रद्दोबदल आरम्भ हो गई है सतोगुणी तत्वों की अभिवृध्दि होने तथा दुर्गुणा, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भव घटने आरम्भ हो जाते है। और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा उदारता प्रेम सन्तोष शान्ति, सेवा-भाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिनोदिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है।...ये गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होगा, वहाँ आत्म-सन्तोष की परमशान्तिदायक निर्झरिणी सदा बहती रहेगी।

आज के युग में पाप अनाचार, अत्याचार, असंयम, हिंसा, छल, झूठ, नास्तिकता, दुःशीलता का इतना भयंकर प्रकोप बढ़ गया है, तब गायत्री मन्त्र की आवश्यकता और महत्ता अपरिहार्य हो जाती है। क्योंकि मात्र इसी साधन के द्वारा व्यक्ति और समाज की रक्षा की जा सकती है। और चेतना को जागृत किया जा सकता है। ऐसा कहा गया है कि जहाँ-जहाँ वेदों की ज्योति फैलेगी, वहाँ-वहाँ प्रकाश की किरणें फैलेंगी। उस घर, परिवार, समाज और देश से निराशा का वातावरण दूर होगा, आशा का संचार होगा, कर्मठता की वृध्दि होगी, पाप की भावना नष्ट होगी, चारित्रिक उन्नति होगी, विकास और प्रगति का अरूपोदय होगा, सुख और शान्ति की स्थापना होगी।

गायत्री मन्त्र में मानव जीवन के सौख्य के लिए बुध्दि की शुध्दि की प्रार्थना है। अनेकों परीक्षणों से भी यह सिध्द हो चुका है कि गायत्री के जय से प्राणशक्ति और बुध्दि बढ़ती है।... मन की धियी हुई उर्जाओं के द्वार मन्त्रोच्चारण के द्वारा खुल जाते हैं। एक पश्चिमी साधक जान वुडरफ के ग्रन्थ 'गारलैण्ड आफ लैटर्स' के अनुसार मन्त्रोच्चारण के साथ जिह्वा की नस-नाड़ियाँ और ध्वनि-लहरियाँ उन प्रसुप्त स्थानों को जागृत करती हैं, जहाँ शरीर में विभिन्न सूक्ष्म शक्तियों के भण्डार भरे पड़े हैं। मन्त्रोच्चारण के अवसर पर सारा अंस्थान एक शक्तिस्त्रोत के रूप में बदाल जाता है। मन्त्र शक्ति से मन की शक्ति बढ़ाने की वक्ष ऋग्वेद में भी कही गई हैं। अथर्ववेद में भी स्पष्ट कहा गया है-

इह ते अ सुरिह प्राण
इहायुरिह ते मनः
उत त्वा निऋत्या पाशेभ्यो
दैव्या वाचा भरामसि ॥

अर्थातः यहाँ इस शरीर में तेरा जीवन, यहाँ प्रमाण, यहाँ आयु और यहाँ तेरा मन स्थिर रहे। दिव्यवाणी द्वारा अधोगति के पाशों से तुझे उठाकर मुक्त करते हैं।

किसी भी साधना की सफलता के लिए मन की दृढ़ता, मानसिक शक्ति की स्थिरता अत्यन्त आवध्यक है। क्योंकि एकाग्रचित्त साधक द्वारा ही मन्त्रविद्या का पूर्ण फल प्राप्त हो सकता है। मन्त्र विद्या को वैज्ञानिक जानते हैं कि जीभ से जो भी शब्द निकलते हैं, उनका कण्ठ, तालु, मूर्धा, ओष्ठ, दन्त, जिह्वामूल आदि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है।

इस उच्चारण काल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकलती है.....इसके प्रभाव से उन ग्रन्थियों का शक्ति भण्डार जागृत होता है। मन्त्रों का गठन इसी आधार पर हुआ है। गायत्री मन्त्र में चौबीस अक्षर हैं इनका सम्बन्ध शरीर में स्थित ऐसी चौबीस ग्रन्थियों से है, जो जाग्रत होने पर सद्बुध्दिप्रकाशक शक्तियों को सतेज करती हैं। गायत्री मन्त्र के उच्चारण से सूक्ष्म शरीर का सितार चौबीस स्थानों से झंकार देता है।

आधुनिकता का यह युग इतनी तीव्रता और संघर्ष से भरा हुआ है कि प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे से आगे रहने के लिए अपनी सामर्थ्य एवं शक्ति से भी अधिक श्रम करते हैं । आधुनिक जीवन की त्वरित गति या तेज रफतार में और महत्वाकांक्षा की दौड़ में जब भी कोई किसी भी कारण से पीधे रह जाता है तो कुण्ठाग्रस्त हो जाता है, जिसकारण वह असन्तुलित भी (कभी-कभी) प्रायः हो जाता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी मन की गांठों की, ग्रन्थियों की बात करता है जिनके कारण मनुष्य का व्यवहार प्रभावित होता है। सामान्य व्यवहार के लिए तथा मन की प्रसन्नता के लिए ग्रन्थियों का निर्मुक्त होना जरूरी होता है। और मनोचिकित्सक इस कार्य में सहायक करता है। अध्यात्मिक क्षेत्र में यह कार्य एक गुरू करता है। संकल्प-विकल्प के बीच फंसा व्यक्ति मानसिक अशान्ति का शिकार हो जाता है। ईश्वरीय चेतना का साक्षात्कार संशायों को, दुष्कर्मों की वासनाओं को जड़ से मिटा देता है। 'वीतशोकः२) तथा निरञ्जन३) व्यक्ति अतिवादी नहीं होता, वह 'आत्मरति' में लीन रहता है। आत्मानन्द की स्थिति में पहुँचकर ब्रह्म ही हो जाता है और ग्रन्थियों से सर्वथा मुक्त हो जाताअ है-

तरति शोकं तरति पाम्मानं
गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तो अ मृतो भवति ।

गायत्री महामन्त्र का प्रभाव इस दृष्टि से अतुलनीय है। गायत्री के चौबीस अक्षर यथार्थ में २४ शक्तिबीज हैं। पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश-इन पाँच तत्वों के अतिरिक्त सांख्यदर्शन में चौबीस अन्य तत्वों का भी वर्णन मिलता है। सृष्टि के इन २४ तत्वों का गुम्फन करके एक आध्यात्मिक शक्ति का आविर्भाव किया, जिसका नाम गायत्री रखा गया। गायत्री के २४ अक्षर २४ मातृकाओं की महाशक्तियों के प्रतीक हैं। उनका पारस्परिक गुम्फन (गुन्थन) ऐसे वैज्ञानिक क्रम से हुआ है कि महामन्त्र के उच्चारण करने मात्र से शरीर के विभिन्न भागों में अवस्थित चौबीस बड़ी ही महत्वपूर्ण शक्तियाँ जाग्रत होती हैं। गायत्री में चौबीस शक्तियाँ गुम्फित हैं साधारणतः गायत्री की उपासना करने से उन २४ शक्तियों का यथोचित मात्रा में लाभ मिल जाता है। जिस प्रकार दुग्ध आदि पेय पदार्थों में, वनस्पति के खाद्य पदार्थों में वे सभी तत्व समाहित रहते हैं और उनको ग्रहण करने से वे हमें प्राप्त भी हो जाते हैं, लेकिन कभी-कभी किसी विशेष तत्व की आवश्यकता हो और वह भी किसी विशेष मात्रा में तो हमें उसके लिए विशिष्ट साधन करना पड़ता है। किसी को दूध, किसी को घृत तो किसी को केवल छाछ ही आरामदायक बनती है, इसी प्रकार एक ही वनस्पति की जड़े, पत्तियाँ अथवा पुष्प अलग-अलग लाभ प्रदान करती हैं। ठीक उसी प्रकार गायत्री के महामन्त्र की २४ महाशक्तियाँ भी विविध अभावों का निराकरण करती हैं। इस दृष्टि से कार्य के लिए अलग-अलग साधनाएँ बताई गई हैं। इन पध्दतियों को 'चौबीस गायत्री साधना' कहते हैं। जिनकी विशिष्ट साधना विशिष्ट फल प्रदान करती हैं यथा-

गणेश गायत्री- सफलता ।नृसिंह गायत्री- पराक्रम ।विष्णु गायत्री- पालनशक्ति ।शिव गायत्री- अनिष्ट निवारण । कृष्ण गायत्री- योग शक्ति ।राधा गायत्री- प्रेम शक्ति ।लक्ष्मी गायत्री- धनशक्ति ।अग्नि गायत्री- तेज शक्ति ।इन्द्र गायत्री- रक्षा शक्ति ।सरस्वती गायत्री- बुध्दि ।दुर्गा गायत्री- दमन शक्ति ।हनुमान गायत्री- निष्ठा शक्ति ।पृथ्वी गायत्री- धारण शक्ति ।सूर्य गायत्री- प्राण शक्ति ।राम गायत्री- मर्यादा शक्ति ।सीता गायत्री- तप शक्ति ।चन्द्र गायत्री- शान्ति शक्ति ।यम गायत्री- काल शक्ति ।ब्रह्म गायत्री- उत्पादक शक्ति ।वरूण गायत्री- रस शक्ति ।नारायण गायत्री- आदर्श शक्ति ।हयग्रीव गायत्री- साहस शक्ति ।हंस गायत्री-विवेक शक्ति ।तुलसी गायत्री- सेवा शक्ति ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विशिष्ट साधना विशिष्ट फल प्रदान करके मनुष्य की अभीष्ट पूर्ति करती है। और समस्त दुःखों का निवारण करती है। मनुष्य के दुःखों के तीन कारण हैं- अज्ञान, अभाव और अशक्ति । जो गायत्री की पूजा उपासना, आराधना और और अभिभावना करता है, वह प्रतिक्षण गायत्री रूपी काम धेनु माता का अमृतोपम दुग्धपान करके आनन्द पाता है और 'समस्त अज्ञानों. अशक्तियों और अभावों के कारण उत्पन्न होने वाले कष्टों से धुटकारा पा कर मनोवांछित फल प्राप्त करता है।' दुःखों से मुक्ति पा आनन्द पाता है।

कोई भी समाज तभी समृध्द और समुन्नत हो सकता है, जब भौतिक प्रगति के साथ ही उसमें नैतिक स्तर, जीवन-मूल्यों तथा आदर्शों का पौषण भी निरन्तर होता रहे । सत्य, आर्थिक और यौनशुचिता तथा सामाजिक क्रियाशीलता प्रभृति के संवर्ध्दन में व्यक्ति तभी सफल हो सकता है, जब उसका अन्तकरण दृढ हो तथा बुध्दि सन्मार्गगामिनी हो । वैदिक वाड्मय में व्यक्ति को मानसिक दृढ़ता और बौद्धिक दिशा-दृष्टि देने के लिए बहुसंख्यक सूकत और मन्त्र उपलब्ध होते हैं। 'गायत्री मन्त्र हमारी बुध्दि को सन्मार्गगामिनी बनाने की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। गायत्री में हमारे दृष्टिकोण को बदल देने की अद्भुत शक्ति है। अपनी उलटी विचारधारा, भ्रान्त मनोभूमि यदि सीधी हो जाए, व हमारी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, विचारधारा, भावनाएँ यदि उचित स्थान पर आ जाएँ तो यह मनुष्य शरीर देवयोनि से बढ़कर और भूलोक, सुरलोक से बढ़कर हर एक के लिए आन्ददायक हो सकता है। हमारी उलटी बुध्दि ही स्वर्ग को नरक बनाए हुए है। इस विषम स्थिति से उबार कर हमारे मस्तिष्क को सीधा करने की शक्ति गायत्री में है। जो उस शक्ति का उपयोग करता है वह विषय-विकारों, भ्रान्त विचारों और दुर्भावों के भव-बन्धन से छुटकर जीवन के सत्यं शिवं सुन्दरं रूप का दर्शन करता हुआ परमात्मा की शाश्वत शान्ति को प्राप्त करता है। इसलिए हमें 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि' की भावना ग्रहण कर 'स्वस्ति पन्थामनुचरेम का संकल्प करना चाहिए ताकि 'पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारूहम अन्तरिक्षाद दिवमारूहम । दिवो नाकस्य पृष्ठात स्वर्ज्योतिर-गामहम की प्राप्ति हो और यह तब हो सकता है जब महाशक्ति रूप गायत्री की कृपा होगी-

ही...श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड ।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड ॥
जगत जननि मंगल करनी, गायत्री सुख धाम ।
प्राणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥

नीरज शर्मा
अध्यक्षा, संस्कृत विभाग , कन्या महाविध्यालय, जालंधर .